सत्य साहित्य

वर्ष 1 / अंक 2
अक्तूबर 2016
Year 1/ Vol 2
October
2016

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः

श्रीराम

मेरी सन्तन सों बन आई । पूर्व लिखया माई ।
सन्तन की हम रेन प्यारे - सन्तन की हम सरना। सन्तन सों बन आई।
सन्त हमारी ओट सताणी - सन्त हमारे गहना
सन्तन स्यों मेरी लेवा देवी, लेवा देवी, सन्तन स्यों व्यवहारा !
सन्तन स्यों हम लाहा खाटया, हर भक्ति भरे भंडारा ।
सन्तन मो को पूंजी सौंपी - उतरया मन का धोखा
धर्मराज अब कहा करोगे - जब फाटया सगलो लेखा ।
महा आनन्द भया, सुख पाया सन्तन के परसादे
कहु नानक हर स्यों मन मानया, रंग रते बिसमादे ।।

(परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज द्वारा हस्तलिखित)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- 2 अक्तूबर : परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस पर
- 13 नवम्बर : परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के महानिर्वाण दिवस पर
- श्री रामशरणम् मोबाईल ऐप का अनावरण
- 9 दिसम्बर : परम पूजनीय श्री महाराज जी के तिलक दिवस पर
- सत्संग के विषय में नियम एवं निर्देश
- God's Nature : Ram is Truth
- परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की डायरी से
- 'ईश्वर का स्वभाव'
- परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश
- अनुभूति
- विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹ 5

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के अवतरण दिवस 2 अक्तूबर के सुअवसर पर लख-लख बधाई !

गुरुमुखी, ध्येय-निष्ठ एवं कृतित्व से शिक्षा देने वाले परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज

गुरुमुखी अपने जीवन में साधना के सर्वोच्च शिखर तक पहुँच सकता है, इसका जीवन्त प्रमाण प्रस्तुत किया प्रातः स्मरणीय परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज ने। केन्द्रीय सरकार दिल्ली में सेवा करते हुए परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज की साधना–पद्धति का अक्षरशः पालन करते हुए, आपने अपने जीवन की साधना को इस ऊँचाई तक पहुँचा दिया कि पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज जैसे जौहरी ने, अपनी आध्यात्मिक सम्पदा उन्हें सौंपकर, 'श्री रामशरणम्' के काम का गुरुतर दायित्व उनके कंधों पर डालकर निश्चिंतता का अनुभव किया।

पूज्य श्री स्वामी जी महाराज के पश्चात् आपने 'श्रीरामशरणम्' का कार्य श्री स्वामी जी महाराज की इच्छा के अनुरूप चलाया। कार्य–व्यवहार में किंचित मात्र भी परिवर्तन नहीं करते हुए, श्री स्वामी जी महाराज के नियमों का आजीवन अक्षरशः पालन किया। इसी का सुपरिणाम है कि विशुद्ध आध्यात्मिक संस्था 'श्रीरामशरणम्' के साधक साधना–पथ पर आगे बढ़ रहे हैं।

आजीवन सच्चे उपासक के रूप में साधना करते हुए, आपने वाणी की तुलना में कृतित्व से साधकों को गढ़ने का काम किया। 'उपासक का आन्तरिक जीवन' में पूज्य श्री स्वामी जी महाराज ने जो वर्णन किया है, उसे कृति–रूप में पूज्य श्री प्रेम जी महाराज में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। आपकी साधना के द्वारा की जाने वाली प्रार्थना जन–कल्याण का अचूक साधन बन गई। अनगिनत साधकों की सांसारिक समस्याओं को प्रार्थना से हल करके उन्हें साधना–पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देने का काम आपने निरंतर किया जिसके फलस्वरूप देश भर में अनेक निष्ठावान साधक खड़े हो सके और 'राम–नाम' का प्रचार–प्रसार करने में सफलता मिल सकी।

एक अच्छे मार्गदर्शक के रूप में अनेक लोगों को लोक और परलोक दोनों सुधारने के परामर्श देने में आप अति निपुण हैं। पूज्य श्री डॉ. विश्वामित्र जी महाराज को गढ़ने का काम तो प्रत्यक्ष रूप से हम सबके समक्ष है। उन्हें निरन्तर साधना के लिए प्रेरित करते हुए, आपने आध्यात्मिक शक्तियों से इतना सम्पन्न बना दिया कि शिष्य के माध्यम से गुरु के काम को देश–विदेश में विस्तृत होता हुआ सम्पूर्ण जगत् देख रहा है।

मौन रहकर अथवा अत्यन्त सीमित शब्दों में अपनी बात कहकर, अहर्निश साधना को ही प्रधानता देने वाले, 'सादा जीवन उच्च विचार' की उक्ति को चरितार्थ करने वाले सच्चे शिष्य, समर्थ गुरु और श्रेष्ठतम साधक का जन्म–दिवस हमें गुरुमुखी होने और साधना–पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दे। ऐसी विनम्र प्रार्थना आप जी के श्रीचरणों में !

जय–जय–राम, जय–जय–राम!

(एक वरिष्ठ साधक) ■

परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज के महानिर्वाण दिवस 13 नवम्बर पर पुण्य स्मरण

'गुरुवर भी होते सुखदाई'

प्रातः स्मरणीय, संत शिरोमणि, परम प्यारे गुरुदेव, पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज सम्पूर्ण जीवन काल में शिष्य जनों के सर्वस्व, सर्वसमर्थ, सर्वशक्तिमान् दाता बने रहे। आज भी हैं। 13 नवम्बर 2016 को उनके 56वें महानिर्वाण दिवस पर, उन्हें कोटिशः साष्टांग प्रणाम! दण्डवत् चरण वन्दना!!

गुरुवर भी होते सुखदाई, बनते जो पिता और माई।
शिष्य जनों पर जाते वारे, भेद भाव से रहते न्यारे।।

उनके होते जन अनुयायी, जो न स्वार्थी मोह-युत माई।
अनुगामी पर जीवन देते, मधुर वचन से मन हर लेते।।

सरल सत्य से जो अपनाते, बन्धु बनते प्रेम के नाते।
. . . . .।।

श्री वाल्मीकीय रामायण के सुन्दरकाण्ड के दसवें सर्ग की इन (43, 44, 45) चौपाईयों में श्री स्वामी जी महाराज ने स्वयं के जीवन का सार दे दिया है। मानो अपना आप खोल कर दिखा दिया कि वे स्वयं कैसे हैं ?

उनके सद्ग्रन्थों – श्री वाल्मीकीय रामायण सार, श्री गीता जी की टीका में, श्री भक्ति प्रकाश जी व अन्य लघु ग्रन्थों में पूज्य श्री ने दर्शाया है कि एक गुरु, संत, महात्मा, सच्चे मार्ग–दर्शक, पथ–प्रदर्शक को हमेशा कर्मयोग की पुष्टि करने वाला एवं शिष्यों तथा साधकों को प्रेम व निष्काम भक्तिमय, सरल, सहज गृहस्थ जीवन जीने की कला को सिखा कर, सदैव परमेश्वरार्पित चिन्तामुक्त प्रसन्न चित्त बनाने वाला होना चाहिए।

हम सबका यह परम कर्तव्य है कि पूज्य श्री स्वामी जी महाराज द्वारा विकसित साधना पद्धति को मन, वचन व कर्म से अपना कर अपने जीवन में बसा लेवें। ढोंग, दिखावा नहीं करें, मनमुखी नहीं, अपितु पूर्णतया गुरुमुखी होकर, उनके बनाए नियमों व अनुशासन का कड़ाई से पालन करें। हम अहंकार व कर्तापन का भाव मिटा कर (गुरुजनों के निमित्त बन कर), निस्वार्थ भाव से जन सेवा करें, राम नाम का प्रचार करें, तो हमारी आध्यात्मिक चेतना का पूर्ण विकास होना सुनिश्चित है। भले ही हमें दिखे या नहीं, पर यह विकास हो ही रहा है।

कृपा करो, परम पूज्य, संत–प्रवर श्री स्वामी जी महाराज, सब पर दया करो! सब पर कृपा करो !! जैसा आप चाहते हो, वैसे ही हमें बना दो!!!

गुरु मात पिता, गुरु ब्रह्म सखा!
तेरे चरणों में दाता मेरा कोटि प्रणाम!!

(एक साधक)

On the auspicious occasion of Guru Purnima 2016 an Android -based Mobile App for Shree Ramsharnam has been launched.

राम

Shree ram sharnam

The App can be downloaded by searching for it in Google Play Store and following the directions. Efforts are underway to develop a similar App for Apple-based devices.

9 दिसम्बर तिलक दिवस के सुअवसर पर पावन स्मरण

'राम प्यारे को मेरी वन्दना'

23 वर्ष पूर्व, 9 दिसम्बर 1993, गुरुवार, (कार्तिक, कृष्णपक्ष, एकादशी) को श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली, के विनम्र आग्रह–युक्त अनुरोध को सम्मान देते हुए, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज, जालन्धर के साधकों के साथ मनाली से श्रीरामशरणम् दिल्ली पधारे।

यहाँ ट्रस्ट के तत्कालीन चेयरमैन, परम आदरणीय श्री विरमानी जी ने पूज्य श्री महाराज जी को तिलक लगा कर, राम नाम के प्रचार व आध्यात्मिक विकास को गतिमान बनाने की भावपूर्ण प्रार्थना की। मानो, उसी समय परम पूजनीय स्वामी जी महाराज एवं परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की सम्पूर्ण आध्यात्मिक पूँजी, उनके अद्वितीय प्रभा–मण्डल और उनकी अतिशय बलवान, शक्तिशाली, सूक्ष्म आध्यात्मिक ऊर्जा, पूज्य श्री विश्वामित्र जी महाराज में एक साथ समाहित हो गई और उसी पल ये तीनों एकरूप हो गए। तब से अब तक एकरूप होकर यह विराट, सूक्ष्म चेतन शक्ति और अधिक प्रभावी होती जा रही है।

लौकिक जीवन के अंतिम श्वास तक परम पूजनीय श्री स्वामी जी महाराज एवं परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के "यंत्र", नौकर बनकर, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज ने, अत्यन्त विनम्रता के साथ, राम नाम के अनथक प्रचार द्वारा, देश विदेश में लाखों लोगों को परम पूजनीय गुरुजनों की व राम नाम की महिमा का अद्भुत दर्शन करवाया है और अभी भी करवा रहे हैं। स्वयं को शून्य, निरभिमानी बनाकर, सबके समक्ष झुके रह कर, हर पल गुरुजनों को आगे रख कर, उनके द्वारा की गई मानव सेवा ने, उनकी यश–कीर्ति का पूरे विश्व के हिन्दू जगत् में डंका बजा दिया है। शत् शत् नमन, हर दिल अज़ीज, प्यारे महाराज जी!

'भूतो न भविष्यति' : महान विभूति, परम पूजनीय श्री विश्वामित्र जी महाराज को बारम्बार नत् शिर वन्दना !!

(एक साधक) ■

सत्संग के विषय में महत्वपूर्ण नियम एवं निर्देश
(22 दिसम्बर 2012 सर्कुलर के अंश)

सभी साधकगणों (संचालक, प्रबन्धक, कार्यकर्ता) से विनम्र प्रार्थना है कि अपने गुरुजनों के समक्ष श्रीरामशरणम् के सत्संगों में जो मर्यादा एवं अनुशासन रहा है, उसी के अनुरूप इन नियमों एवं निर्देशों का सजगतापूर्वक विधिवत् पालन करें।

1. सभी सत्संग–कार्यक्रमों में, साधकों को नीचे चौकड़ी लगाकर (पालथी मार कर) बैठना चाहिए। कुर्सियाँ केवल शारीरिक रूप से जमीन पर बैठने में अशक्त साधकों के लिए उपलब्ध होती हैं। कोई किसी बड़े पद या पोजीशन पर है, मात्र इसलिए कुर्सी पर बैठना ठीक नहीं है। प्रभु के दरबार में साधक जन का ऊँचे स्थान (कुर्सी या मूढ़े) पर बैठना उचित नहीं है।

2. साधना–सत्संगों में कुर्सी या ऊँचे स्थान पर बैठने की व्यवस्था नहीं रहती।

3. कुर्सियाँ हॉल के अंदर, दरवाजे पर या एकदम सामने नहीं रखनी चाहिए। साइड में बरामदे या अन्यत्र रखी जा सकती हैं।

4. श्रीरामशरणम् के सत्संग कार्यक्रमों में उपस्थित होने वाले सभी साधकगण गरिमामय वस्त्र (शिष्ट वेशभूषा/कपड़े) पहन कर सम्मिलित हों। जो सत्संग की मर्यादा के अनुकूल स्वच्छ व सादगीपूर्ण हो।

5. श्रीरामशरणम् परिसर में व सत्संग स्थलों पर अथवा जहाँ तक संगत बैठा करती है, कभी भी ऊँची आवाज़ में बातें नहीं करनी हैं। ऊँची आवाज देकर किसी को न बुलायें।

6. सत्संगों में सिनेमा के गानों की धुनों पर आधारित भजन नहीं गाने चाहिए। श्री स्वामी जी महाराज एवं संतों के भजनों व धुनों को प्रधानता दी जानी चाहिए।

निवेदकः श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट,
श्रीरामशरणम्, नई दिल्ली ■

God's Nature : Ram is Truth

सत्यानन्द

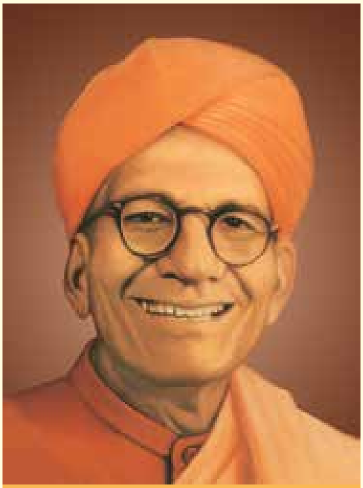

Absolute Substance of existence, it's Pure Essence.
Beautiful Indivisible Truth is, the Being and Quintessence.

At all times in the three worlds, never in non-existence.
Said Truth is Reality, the Universal Spirit of Existence.

That which cannot be broken down, by metabolic process.
Know That to be Truth, Immutable Deathless.

That which is Changeless, Unalloyed Austere.
Indeed That is Truth, so say the seers.

Natural state of Shree Ram is, the Infinite Perfect Spirit.
Regarded as Constant Unchanging, Unfathomable Without Limit.

Incarnation of Truth, Basis of all Reality.
Absolute Existence, Essence of all Veracity.

Ram's Being in all respects, is Entirely Immutable.
Indeed always Absolutely Pure, of Uniformity Inimitable.

Name and form are perishable, so is the endowed object.
To combine of name and form, Compassionate Ram is not subject.

All creation is causal, thus subject to destruction.
Benevolent Truth Radiant, Ram is Beyond Causation.

Said to be Immortal Immovable, Ram is Beyond Effect.
Verily the Abode of all Truths, God alone is Truth Perfect.

Supreme Spiritual Immortal Abode, Beginningless and Endless.
Declare saints sages ascetics, to be Immutable and Changeless.

Ram's Real Being is, not limited by space and time.
Non-dual in Essence, Supreme Soul Lord Sublime.

Ram is Undifferentiated, there is none other like Ram.
The Eternal Existential Reality, Everything Exists in Ram.

Free from part-whole relations, the One Absolute Existence.
Beyond cause and effect, Ram is Universal Sustenance.

Like mass of light-rays are, with the Sun in Union.
So all beings are with, Ram in Communion.

Blissful Spirit of Ram runs, through the Garland of Creation.
On which all beautiful worlds are strung, in prettification.

All-Pervading Spirit Ram, O Truth of all Truths.
Grant me Love for Thyself as, Incarnation of Truth!

(यह अंश मूलतः 'ईश्वर स्वरूप : राम सत्स्वरूप है', भक्ति–प्रकाश जी, पृष्ठ 103–104 से अनुवादित है)

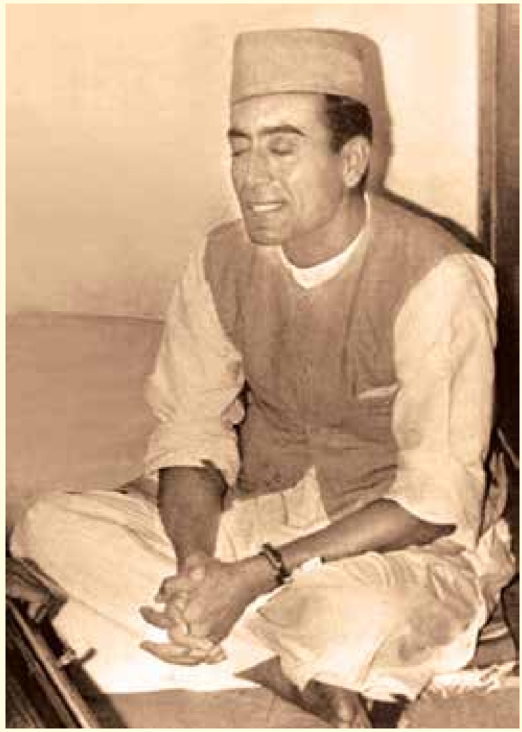

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज की डायरी से

Good is all; evil is that which might be if man forsook his guiding light. In the serene mind of God, There is no duality, no good & bad, no understanding & ignorance. The brilliancy of all-Knowing Mind dissolves all shadows, all negations."

'शुभ सब कुछ है। बुराई होती है, केवल रास्ता दिखाने वाले उजाले को छोड़ने से। परमेश्वर के हृदय कमल में दो धाराएँ नहीं – अच्छी और बुरी, ज्ञान तथा अज्ञानता। सर्वव्यापक को जानने वाले हृदय में, सब परछाई व अनावश्यकताएँ (negations) हल हो जाते हैं।'

'ईश्वर का स्वभाव'

विश्वामित्र

परमेश्वर जो सर्वशक्तिमय है, अर्थात् सब शक्तियों का मालिक है, अनेक शक्तियों से सम्पन्न है। संत महात्मा कहते हैं, वह अनेक शक्तियों का मालिक है, लेकिन उनमें से एक शक्ति सर्वोपरि है, सर्वोच्च है, और वह है हमारे ऊपर दया की शक्ति। यह सर्वोपरि है, सर्वोच्च है, उस का हृदय इतनी जल्दी द्रवित होता है, इतनी जल्दी करुण पुकार सुनता है। बदकिस्मती हमारी, दुर्भाग्य हमारा, हम इस शक्ति का सदुपयोग नहीं करते। क्यूँ ? विश्वास ही नहीं है। पुलिस को बुला लेंगे, सेना से सहायता माँगेंगे, लेकिन परमेश्वर से सहायता माँगने वाला तो गजराज है, या द्रोपदी है, या दूसरे, हम नहीं। ऐसा विश्वास ही नहीं है हमें कि परमेश्वर हमारी रक्षा करने योग्य है। अपने बल पर हमें विश्वास, दूसरे के बल पर भी बहुत विश्वास, परमेश्वर तो हमारे लिए बहुत ही निर्बल है। उसके बल पर विश्वास नहीं, पर जिन्होंने पुकारा उनके लिए दौड़ते हुए आए, बिन देरी के आए, अविलंब आए।

परमेश्वर की दया कैसे उपलब्ध हो सकती है ? करुणा कैसे मिल सकती है ? कृपा हमारे ऊपर कैसे हो सकती है ? **राम कृपा–अवतरण** में स्वामी जी महाराज ने बड़ा स्पष्ट लिखा :

देव दया स्व शक्ति का, सहस्त्र कमल में मिलाप।
हो सत्पुरुष संयोग से, सर्व नष्ट हो पाप।।

इस बात को न भूलिएगा, कि उस देव की दया तब अवतरित होगी, उसका हृदय हमारे ऊपर तब द्रवित होगा, जब हमारे बीच में कोई संत होगा। मानो परमेश्वर ने संत को इतना अधिकार दे रखा है, परमात्मा उस संत का आज्ञाकारी बन जाता है। आज्ञा तो नहीं देता, वह तो बिलखता है, दूसरे के लिए। यह माँग उसकी निरंतर बनी रहती है। दूसरे तेरी दया से वंचित न रहें, कोई तेरी कृपा से वंचित न रहे, यही तो एक संत की निरंतर माँग हुआ करती है।

प्रभु श्री राम कहते हैं, 'सुग्रीव ! विभीषण शरणागत हो कर आया है, घोषणा करके आया है, रावण के दरबार में, मैं प्रभु राम की शरण में जा रहा हूँ।' भगवान् की बात सुन कर सुग्रीव ने कहा था, 'बन्दी बना कर रख लीजिए, यह विश्वास के योग्य नहीं है। दशानन का भाई है, दशमुख का भाई है।' सुग्रीव नहीं जानता, प्रभु तो सहस्त्रानन के बड़े भाई हैं। शेषनाग काल का प्रतीक, सहस्र मुख वाला है। भगवान् राम भला दशानन जैसे भाई की क्या परवाह करते हैं, कोई चिन्ता नहीं, कोई भय नहीं। यह भेदिया है, यह, भेद लेने आया है, भगवान् उनकी बात सुन कर मुस्कराते हैं। मेरे जैसा ही है, मैं भी तो हर एक के हृदय में बैठ कर सबका भेद ही तो लेता हूँ। विभीषण यदि आ गया तो कोई बात नहीं, उसे आने दीजिएगा, उसे बंदी नहीं बनाना, उस प्रकार से नहीं जैसे तुम कह रहे हो, बंदी तो मैं बनाऊँगा, लेकिन अपने ढंग से। उसे कहते हैं, 'जो एक बार मेरी शरण में आ गया, यदि उसने करोड़ों

ब्राह्मणों की हत्या भी कर रखी है तो भी मैं उसे दुतकारता नहीं।'

सुग्रीव जैसा व्यक्ति तो सोच सकता है, ठीक है महाराज जिंदगी भर पाप करते रहो, जाके एक बार कह दो 'मैं आ गया आप की शरण में'। आपने माफ कर दिया यह बात सुग्रीव सोच सकता है, हमारे जैसा सामान्य व्यक्ति सोच सकता है। 'भाई सुग्रीव! यहाँ पर एक कठिनाई है, पाप करने वाला व्यक्ति, जिसे पाप में रुचि है, इतनी आसानी से भजन पाठ नहीं करता है, मेरी ओर नहीं मुड़ता है। भगवान् श्री कृष्ण गीता जी में कहते हैं, मेरी शरण में कोई दुराचारी भी आ जाता है, पापी पापकर्मी भी आ जाता है, तो भी साधु ही मानने योग्य है। क्योंकि वह सही दिशा में मुड़ गया है। जहाँ उसे जाना चाहिए, जिस ओर उसे जाना चाहिए, वह आ गया है, वह साधु जानने योग्य है। वह आ गया है शेष काम तो मेरा है, मैं करुंगा।'

ऐसा है स्वभाव उस परम ब्रह्म परमात्मा का। अतिशय दयावान है। क्या समझते हो उसकी दया का अर्थ? क्या समझते हो उसकी करुणा का अर्थ? क्या समझते हो उसकी कृपा का अर्थ? क्या वह आपको छोटे से बड़ा व्यापारी बना देता है? एक कार से अनेक कारें दिलवा देता है? छोटे अफसर से बड़ा अफसर बना देता है? छोटे मकान की जगह बड़ा मकान दिलवा देता है? क्या इसे उसकी दया, करुणा व कृपा मानते हो? नहीं जिस वक्त एक जीव का चित्त बिना प्रयास परमेश्वर की ओर मुड़ने लग जाए, अपने परमेश्वर के चरणारविंद की ओर जाने लग जाए तो समझ लीजिए परमेश्वर की दया, कृपा, करुणा अवतरित हो गई है। एक छोटे से दृष्टांत से समझिएगा।

नाम तो जपते हो परमात्मा का, पर आशा रखते हो संसार से। ये दुराशा है, इसे तुरंत मारो।

महर्षि विश्वामित्र का यज्ञ सम्पन्न नहीं हो रहा। राजा दशरथ के पास जाते हैं, भगवान् राम एवं लक्ष्मण को लाने, वे इस यज्ञ की रक्षा करें। प्रभु राम रथ पर नहीं बैठते। कितने अच्छे शिष्य हैं, नहीं तो गुरु को भी बेचारे को रथ मिल जाता, जैसे जैसे गुरु चले, आगे आगे नंगे पांव, वैसे ही भगवान् राम भी लक्ष्मण सहित पीछे–पीछे चल पड़े हैं। सबसे पहले ताड़का मिलती है, एक हज़ार हाथी के बल–वाली राक्षसी। संत महात्मा विश्लेषण करते हैं। साधक जब अपनी साधना आरम्भ करता है, उसे ताड़का मिलती है। कौन है यह ताड़का ? यह है दुराशा। आशा सुन रखा है आपने, नाम निराशा सुन रखा है, लेकिन संत महात्मा कहते हैं, यह दुराशा है, अर्थात किसी गलत व्यक्ति से आशा करनी। कौन है यह ताड़का। नाम तो जपते हो परमात्मा का, पर आशा रखते हो संसार से। ये दुराशा है, इसे तुरंत मारो। एक साधना करने वाला चाहता है कि उसकी साधना सफल हो, उसका चित्त परमेश्वर की ओर अपने आप मुड़ने लगे, तो उसे सबसे पहले इस दुराशा–रूपी ताड़का का हनन करना है। मार दिया एक तीर से और मार कर उसका जो तत्व है अपने शरीर में ले लिया। क्या अर्थ है इसका? मैं आशा को नहीं मारना चाहता। आशा नहीं मरती। यह आशा संसार के प्रति न रह कर, मेरे प्रति हो जाए। आशा संसार से मत रखो, मेरे से रखो। आशा का रुख मेरी ओर मोड़ लो।

किसी ने उलाहना दिया, ताड़का को मार दिया, आगे अहिल्या मिलने वाली है, उसे तार दिया। ये क्या न्याय है आपका ? एक को तीर से मारा, दूसरी को अपनी चरण धूलि प्रदान कर के, उसका उद्धार कर दिया। भगवान् कहते हैं, 'भाई ! सच मानो, न मैंने किसी को मारा, न किसी को तारा है। गुरु आज्ञा थी, एक के लिए कहा मार दो, दूसरी के लिए कहा तार दो। मैंने अपनी इच्छा से कुछ नहीं किया। आपको यह लगता है एक को मारा, एक को तारा। डाक्टर किसी को कड़वी दवाई दे या मीठी। लक्ष्य एक ही है, ये रोगी, रोग–मुक्त हो जाए। एक को तीर से मारा, दूसरी को चरण धूलि दी, पर दोनों को मैंने परमधाम प्रदान किया। ये मेरा स्वभाव है, मेरी दया है, कृपा है, मेरी करुणा है। अहिल्या मिली, अति सुन्दर नारी, ब्रह्मा जी ने जिस वक्त इस सुन्दर नारी को बनाया, तो सारा जगत् मोहित हो गया, इन्द्र देवता भी मोहित हो गए, मन में ठान ली इस

के साथ शादी करुंगा। कौन है अहिल्या ? हमारी बुद्धि, हमारा सौन्दर्य, बुद्धि के कारण, यदि यह बुद्धि न होती तो पशु, पक्षी, कीड़े, मकौड़े होते। बुद्धि के कारण हम मानव हैं। बुद्धि को कहाँ जाना चाहिए, ब्रह्मा जी स्पष्ट करते हैं, एक तरफ इन्द्र माँग रहा है, जो भोगी है, जो पुण्य भी करता है, तो भोग भोगने के लिए। इस बुद्धि के पास दो संकल्प हैं—इन्द्र के पास जाए, या एक योगी तपस्वी, त्यागी के पास जाए। ब्रह्मा जी महाराज इसे महर्षि गौतम के पास भेजते हैं, इन्द्र के पास नहीं। इस भोगी के साथ बुद्धि को नहीं रहना चाहिए, भोग का समर्थन किसी बुद्धि को नहीं करना चाहिए।

जब चित्त स्वतः परमेश्वर की ओर मुड़ जाए, अपने आप चित्त जाने लग जाए परमेश्वर की ओर, तो यह उसकी दया है, कृपा है, करुणा है।

दूसरी बाधा है, यह बुद्धि जो भोग का समर्थन करने वाली है जड़ बुद्धि। गौतम ऋषि भोग की बुद्धि को अस्वीकार कर देते हैं। सारी कथा आप जानते ही हैं, जब जड़ता ठीक होती है, तो गौतम ऋषि फिर उसे स्वीकार कर लेते हैं। यह बुद्धि, भोग का समर्थन न करे, यही इस की सुंदरता है। धनुष तोड़ते हैं, परशुराम आता है, धनुष अहंकार का प्रतीक है, तोड़ दिया। शिव धनुष अहंकार का प्रतीक है, साधक ने तोड़ दिया। तब परशुराम आता है, जिसके पास विष्णु का धनुष है। यह धनुष चित्त का प्रतीक है। परशुराम कहते हैं, ‘वह धनुष तो पुराना था अपने आप टूट गया, इस धनुष को तोड़ कर दिखाओ।’ कहते हैं विष्णु धनुष, चित्त अपने आप भगवान् राम के हाथ में चला जाता है। यहीं साधना सम्पन्न होती है, जब चित्त स्वतः परमेश्वर की ओर मुड़ जाए, अपने आप चित्त जाने लग जाए परमेश्वर की ओर, तो यह उसकी दया है, कृपा है, करुणा है।

परमेश्वर के स्वभाव की चर्चा चल रही है, दो सप्ताह पहले मैं वृंदावन गया, पूजनीय अमीर चंद शास्त्री हैं वहाँ पर स्वामी जी के पुराने जान पहचान वाले साधक कहिए, सहयोगी कहिए, उनके श्री चरणों में कुछ मिनट बैठने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कहने लगे एक नया अर्थ बताऊँ राम का? ‘र’ अर्थात राधा ‘म’ अर्थात माधव। दोनों आपस में मिल जाएँ तो बनता है ‘राम’। कहने लगे मैं तो युगल सरकार का उपासक हूँ, पर मेरी पत्नी अद्वैती है, अद्वैत में विश्वास रखती है, वह राम की उपासिका है। मेरा मंदिर यहाँ है, मेरी पत्नी का ऊपर है, वहाँ राम की उपासना करती है।

कोई कोटि अपराध करके मेरे सम्मुख आ जाता है, तो मैं उसको दुतकारता नहीं, मैं उसे त्यागता नहीं। कैसा सुन्दर स्वभाव है हमारे परमेश्वर का। एक बार मेरे सामने आकर क्या करे। झुक कर प्रणाम करे आपको? आपकी स्तुति गाए? प्रणाम करे तो भी ठीक, न करे तो भी ठीक। मैं तो दोनों बाहें फैलाए उसको अपने हृदय से लगाने के लिए तैयार खड़ा हूँ। न प्रणाम करे, रावण ने मुझे प्रणाम नहीं किया, कंस ने मुझे प्रणाम नहीं किया, शिशुपाल ने भी मुझे प्रणाम नहीं किया, पर इन सब को भी मैंने अपना ही धाम दिया। न प्रणाम करना चाहो, कोई बात नहीं। न प्रणाम करो, पर एक बार मेरे सामने आकर खड़े हो जाओ। क्या अर्थ है सामने आकर खड़े होने का ? प्रेमपूर्वक मुझे याद करो, स्नेहपूर्वक मेरा स्मरण करो, इसी को कहेंगे परमेश्वर के सामने हो जाना। प्रेम में इतना बल है, जो प्रेमी एवं प्रेमिका को आमने—सामने ला दे। उसी को तो प्रेम कहा जाता है। आमने—सामने लाकर खड़ा कर दे, उसी को तो प्रेम कहते हैं। जो दूरी मिटा दे, उसी को तो प्रेम कहते हैं।

कैसी विलक्षण महिमा है इस प्रेम की, भगवत्—प्रेम की, दिव्य प्रेम की। प्रेमपूर्वक नाम जपिएगा, प्रेमपूर्वक नाम का सिमरन करिएगा, तो आप परमेश्वर को अपने अंग—संग बिल्कुल आमने—सामने ही पाओगे और पाना भी चाहिए। इस प्रकार का जपा हुआ

नाम, आपको किसी बंधन में नहीं रहने देता। भगवान् कहते हैं, 'प्रेमपूर्वक यदि नाम एक बार जपा जाए तो भवसागर सूख जाता है। तैरना उसे पड़ता है जो अपनी बाँह परमेश्वर को नहीं पकड़ाता। जिसने अपनी बाँह परमेश्वर श्री राम को पकड़ा दी है, उसके लिए सागर सूख जाता है। पानी ही नहीं है, तो तैरना कहाँ है? उसके लिए सागर नहीं रहता। उसको तैरने की आवश्यकता कहाँ रहती है ? वह माया जंजाल में नहीं फंसा करता। एक बार आकर प्रेमपूर्वक, मेरे आमने–सामने हो जाओ। प्रश्न उठता है अनेक बार हमने पुकार के भी देखा पर वह आता नहीं। शर्त रखी है परमात्मा ने अपने स्वभाव में। 'निस्सहाय हो कर पुकारोगे तो मैं अनसुनी नहीं करता। और सहारों का भी आश्रय लेकर मुझे पुकारोगे तो मैं इतनी आसानी से सुनता नहीं।' एक शर्त रख दी। क्या पुकारना अनिवार्य है ? जीवन में ऐसे भी तो अवसर आते होंगे, सोए सोए ही छत गिर जाती है, परमेश्वर को पुकारने का अवसर भी नहीं मिलता। क्या ऐसे व्यक्तियों को बिना आसरे के ही मरने देता है? क्या ऐसे व्यक्तियों की परमेश्वर रक्षा नहीं करता ? कैसा दयालु है ? कैसा कृपालु है? अनेक प्रश्न चिन्ह आ जाते हैं, उसके स्वभाव पर।

एक और स्वभाव –मुझे बाँधना ही आता है, मुझे खोलना नहीं आता। सखियो, मैंने बाँधना ही सीखा है। आप जहाँ मरज़ी जाते रहो, जहाँ मरज़ी भटकते रहो, जिसको मैंने बाँध लिया है, उसको मैं छोड़ता नहीं। आज एक सखी के घर नन्हे–मुन्ने भगवान् कृष्ण चले गए। माखन चोरी करते हुए पकड़े गए। सखी ने पकड़ लिया, क्यों चोरी कर रहे हो ? तू मेरे घर में आया ही क्यूँ? भगवान् कहते हैं, 'सखी तेरे पति की कसम आगे से तेरे घर नहीं आऊँगा।' मेरे पति की कसम क्यूँ खाते हो ? 'अच्छा तेरे बाप की कसम, अब इसके बाद कभी तेरे घर नहीं आऊँगा।' 'सखी और चिढ़ गई। कहती है घर मेरा है। भगवान् कहते, 'सखी रोज़ कथा सुनती हो, लेकिन अभी तक भी, मैं और मेरा नहीं गया। अरे सब कुछ मेरा है। मान ले इस बात को, मैं अपने ही घर आया हूँ, तू मुझे क्यों निकाल रही है।' वह निकाल रही है भगवान् निकल नहीं रहे। तू जितना मरज़ी मुझे निकाल पर यह घर मेरा है, मैं अस्वीकार नहीं करता। यह भगवान् का स्वभाव है। सखी मानी नहीं और पकड़ कर बाँध देती है। कस कर बाँधती है, पहले पूछती है, तूने माखन खाया, मैंने अपनी आँखों से देखा है। भगवान् कहते हैं, 'नहीं तुझे गलती लगी है, इस ढेले में चींटी चल रही थी, मैं उसे निकालने लगा तो उतने में तू आ टपकी, तुझे लगा कि मैं माखन चोरी कर रहा हूँ। ठीक बात है पर यह तेरी अंगुली तो भर गई पर यह तेरे मुख पर माखन कैसे आ गया? अरे उसी वक्त मेरे मुख पर मक्खी बैठ गई उसे हटाने लगा तो माखन मेरे मुख पर लग गया। मैंने माखन खाया कहाँ।'

यह बात सखी को सन्तुष्ट नहीं कर पाई, उसने भगवान् को बाँध दिया–ज़ोर से। भगवान् कहते हैं,'इतना कसके तो न बाँध, देखो न, मेरा कोमल शरीर है, मुझे दर्द होती है।' सखी को तरस आ गया, उसने थोड़ा सा कान्हा को ढीला कर दिया। ढीला करने के बाद स्वयं और सखियों को अपनी सहेलियों को बुलाने चली गई। आओ देखो मैंने आप सब के कान्हा को बाँध रखा है। भगवत् प्रेम इस प्रकार का है, भक्ति इस प्रकार की है, जहाँ इस में प्रदर्शन की भावना आ जाती है, भक्ति हवा हो जाती है। भगवान् कृष्ण को मौका मिला, ढीली रस्सी थी, भाग गए। 'सखी तुझे बाँधना ही नहीं आता।' सखी कहती है, अच्छा तो तू बाँध के दिखा। किस्मत–वाली सखी, बाँध ही रहे थे, समाधि लग गई। सखी का नाम, रूप सब खत्म हो गया, तल्लीन हो गई, समाधि लग गई। सखी थोड़ी देर बाद मुस्कराते हुए कहने लगी, मैंने भी तो तेरी रस्सी ढीली की थी, इतना कस के न बाँध। भगवान् कहने लगे,'सखी तुझे बाँधना नहीं आता, मगर मुझे बाँधना ही आता है। तूने ढीली कर दी थी, मगर मैं ढीली नहीं कर सकता, यह मेरा स्वभाव ही नहीं है, मैं जिसको एक बार पकड़ लेता हूँ, पकड़ ही लेता हूँ, मुझे छोड़ना नहीं आता।'

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का यह लेख आने वाले अंक में जारी रहेगा।)

परम पूजनीय श्री महाराज जी के पत्रों के अंश

Leaving the world is not solution. Where will you go where there is no world. Develop mental detachment. Work as a ~~serving~~ servant of the Lord & perform all duties assigned by Him honestly, truthfully to please Him & not the world. This is not impossible. God's Grace be upon you to bless you with adequate strength.

Loving Jai Jai Ram.

17.11.2004

संसार छोड़ना कोई समाधान नहीं है, ऐसी किस जगह पर आप जाएँगे जहाँ कोई संसार न हो। मानसिक अनासक्ति विकसित कीजिए। परमात्मा के चाकर बन कर काम कीजिए। उसके द्वारा दिए गए सभी काम पूरी ईमानदारी और सच्चाई से, उसे ही प्रसन्न करने के लिए कीजिए न कि संसार को। ऐसा करना असंभव नहीं है। परमेश्वर कृपा आप पर बनी रहे और वह आपको पर्याप्त शक्ति दे। सप्रेम जय जय राम।

Thanks a lot. May Divine Light dispel darkness from our lives. May we recognise our Divinity & become as pure as Lord is.

Most Loving Jai Jai Ram & joyous Diwali.

5.11.2004

बहुत धन्यवाद। दिव्य ज्योति हमारे जीवन से अन्धकार दूर करे। हम अपनी दिव्यता को पहचान सकें और परमेश्वर की तरह पवित्र बने। सप्रेम जय जय राम व आनन्दमयी दिवाली की बधाईयाँ।

Best wishes to all of you for a marvellous new year and a joyous Diwali.

Loving Jai Jai Ram.

3.XI.2005

आप सभी को अनूठे नए साल और आनन्दमयी दिवाली की बधाईयाँ। प्यार भरी जय जय राम।

The sole help, prop is Lord HIMSELF. Kindly remain anchored to Him alone. Then no one else is required. Make Almighty God as your sole refuge. He shall protect you, help you in all matters. Love Him fervently. May Shree Ram bless.
S. S. 20-5-2005

एक मात्र सहारा प्रभु स्वयं हैं, कृपया केवल उससे ही जुड़े रहिए, फिर किसी और की आवश्यकता नहीं रहेगी। सर्वशक्तिमान परमात्मा की एकमात्र शरण में जाइए। वह आपकी रक्षा करेगा और सभी विषयों में आपकी सहायता भी। उससे पूरी शिद्दत से प्रेम कीजिए। प्रभु राम आप पर कृपा करें। ■

अनुभूति

'प्रार्थना का प्रभाव'

डेढ़ साल से मुझे हाई बी पी था और साँस लेने में भी मुश्किल होती थी। दवाइयों का कोई असर नहीं हो रहा था। कई बार जाँच हुई, परन्तु कुछ पता नहीं चल रहा था। बाद में, डॉक्टर की सलाह पर सीटी–स्कैन करवाने पर पता चला कि थाईराइड ग्लैंड बाहर बढ़ने की बजाय, अन्दर बढ़ गया है और साँस की नली उसमें लिपट गई है। ऑपरेशन के अलावा कोई चारा नज़र नहीं आ रहा था, लेकिन ऑपरेशन रिस्की भी था, इसलिए कई सर्जनों ने ऑपरेशन करने से मना कर दिया। उनका मानना था कि ऑपरेशन के बाद आवाज़ वापस न आने का खतरा है। इसके अलावा, यह भी सम्भव था कि ऑपरेशन के लिए पसलियाँ काटनी पड़ें और साँस की नली लगानी पड़े। ऑपरेशन जान–लेवा हो सकता था, इसलिए निर्णय लेना मुश्किल हो रहा था। मेरे पति और बेटे को लगा कि यह जोखिम उठाना ही पड़ेगा और उन्होंने डॉक्टर को ऑपरेशन करने की अनुमति दे दी।

ऑपरेशन के लिए जब मुझे ओ टी में ले जाया गया, तो मैंने उन डॉक्टर से मिलने का अनुरोध किया जिन्हें ऑपरेशन करना था। उनके आने पर जब मैंने उनसे हाथ मिला कर 'ऑल दी बैस्ट' कहा तो वे हँसने लगे। उसके बाद मैंने हाथ जोड़कर अपने राम जी को याद किया और गुरु महाराज से विनती की, कि आप तो स्वयं डॉक्टर हैं, आपको किसी और डॉक्टर की क्या आवश्यकता ? इन डॉक्टर के हाथों द्वारा ऑपरेशन आप ही कीजिएगा। प्रार्थना करने के बाद मैंने डॉक्टर को ऑपरेशन करने की अनुमति दे दी। ऑपरेशन के लिए जब मुझे बेहोश करने ही वाले थे, उसी समय मैंने डॉक्टर की आवाज़ सुनी, वे कुछ चीज़ें माँग रहे थे। ओ टी में भगदड़ मच गई कि डॉक्टर ने अपना निर्णय बदल दिया। अब वे पसलियाँ काटने की बजाय, गले से ऑपरेशन करेंगे। पाँच घण्टे ऑपरेशन चला।

बेहोशी से निकलते ही मैंने देखा खूब बड़े हल्दी रंग का एक गोल आकार जिस पर रोली के रंग से बड़े बड़े अक्षरों में 'राम' लिखा था। मैं साथ में 'राम राम' बोलने लगी और मुस्कुराती जा रही थी। मुझे बार–बार डॉक्टर समझाने की कोशिश कर रहे थे, कि इस हालत में बोलना ठीक नहीं है, लेकिन मुझ पर तो मेरे प्रभु की कृपा हो रही थी। मैं लगातार श्री अधिष्ठान जी को देख रही थी।

वहाँ मौजूद सभी लोग हैरान थे, कि यह सब कैसे हो गया? मैंने बाद में उन्हें बताया कि मेरे गुरु महाराज आए थे और ऑपरेशन उन्होंने ही किया था। डॉक्टर और उनकी टीम के लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। जितनी देर ऑपरेशन चल रहा था, उतनी देर मेरे पति बाहर बैठे 'श्री अमृतवाणी जी' का पाठ कर रहे थे। हमें साक्षात् अपने प्रभु और गुरुजनों की कृपा देखने के लिए मिली। यह है प्रार्थना का प्रभाव।

(जुलाई 2015) ■

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

17 जून से सितम्बर 2016

साधना सत्संग, खुले सत्संग एवं नाम दीक्षा का विवरण

- **मेरीलैंड**, अमेरिका में 19 जून को अमृतवाणी सत्संग हाल के स्थापना दिवस पर खुला सत्संग लगा।
- **सैलर्सबर्ग**, पैन्सलवेनिया अमेरिका में 23 से 26 जून तक खुला सत्संग लगा। जिसमें 260 व्यक्ति सम्मिलित हुए और अमेरिका में 23 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **हरिद्वार** में 30 जून से 3 जुलाई तक परम पूजनीय डा. विश्वामित्र जी के महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में साधना सत्संग लगा।
- **बीकानेर**, राजस्थान में 10 जुलाई को नवनिर्मित श्रीरामशरणम् का उद्घाटन हुआ, जिसके पश्चात् 122 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

नवनिर्मित श्रीरामशरणम्, बीकानेर

- **हरिद्वार** में 14 से 19 जुलाई तक गुरुपूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) के उपलक्ष्य में पंचरात्रि साधना सत्संग लगा। 14 जुलाई को 58 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में 19 जुलाई को गुरुपूर्णिमा (व्यास पूर्णिमा) के पावन अवसर पर 112 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **होशियारपुर**, पंजाब में 19 जुलाई को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 44 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली**, श्रीरामशरणम् में 27 से 29 जुलाई तक परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में खुला सत्संग लगा।
- **काठमण्डू**, नेपाल में 30 जुलाई को एक दिवसीय खुला सत्संग लगा जिसमें 52 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रोहतक**, हरियाणा में 13 व 14 अगस्त को खुले सत्संग का आयोजन हुआ।
- **रेहटी**, जिला सिहोर, मध्य प्रदेश में 14 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् नाम दीक्षा का आयोजन हुआ। जिसमें भारी वर्षा के बावजूद लगभग 2500 व्यक्ति सत्संग में सम्मिलित हुए और 1038 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **कोलकता** में 21 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 53 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **दिल्ली** श्रीरामशरणम् में 21 अगस्त को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् 43 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रतनगढ़**, राजस्थान में 27 व 28 अगस्त को खुला सत्संग लगा। जिसमें 395 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **नामरूप**, आसाम 31 अगस्त को विशेष अमृतवाणी सत्संग एवं प्रवचन के पश्चात् 96 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।
- **रिवाड़ी**, हरियाणा में 3 व 4 सितम्बर को खुले सत्संग का आयोजन हुआ। जिसमें 64 व्यक्तियों ने नाम दीक्षा ग्रहण की।

निर्माणाधीन श्रीरामशरणम् की प्रगति

- **अब्दुल्लागंज**, नज़दीक भोपाल, मध्य प्रदेश में श्रीरामशरणम् का निर्माण कार्य प्रगति पर है।

Sadhna Satsang (October 2016 to March 2017)

Haridwar(Ramayani)	2 Oct to 11 October	Sunday to Tuesday
Haridwar	11 to 14 November	Friday to Monday
Gwalior	25 to 28 November	Friday to Monday
Indore	13 to 16 January	Friday to Monday
Hansi	3 to 6 February	Friday to Monday

Open Satsang (October 2016 to March 2017)

Jammu	14 to 16 October	Friday to Sunday
Pathankot	22 to 23 October	Saturday & Sunday
Hissar	5 to 6 November	Saturday & Sunday
Fazalpur, Kapurthala	19 to 20 November	Saturday & Sunday
Hoshangabad	8 to 9 December	Thursday & Friday
Bhiwani	10 to 11 December	Saturday & Sunday
Surat	17 to 18 December	Saturday & Sunday
Sujanpur	24 to 25 December	Saturday & Sunday
Delhi (Ramayan Path)	31 December	Saturday
Jhabua	8 to 10 January	Sunday to Tuesday
Mumbai	21 to 22 January	Saturday & Sunday
Pilibanga	28 to 29 January	Saturday & Sunday
Bhopal (Ramayan Path)	10 to 12 February	Friday to Sunday
Bilaspur	17 to 19 February	Friday to Sunday
Kohlapur, Nepal Ganj	24 February	Friday
Delhi (Holi)	11 to 13 March	Saturday to Monday
Jhabua (Maun Sadhna)	27 March to 5 April	Monday to Wednesday

Naam Deeksha in Other Centers (October 2016 to March 2017)

16 October 2016	Sunday	Jammu
23 October 2016	Sunday	Pathankot
6 November 2016	Sunday	Hissar
20 November 2016	Sunday	Fazalpur, Kapurthala
25, 26 & 27 November 2016	Friday, Saturday & Sunday	Gwalior
27 November 2016	Sunday	Chambi
9 December 2016	Friday	Hoshangabad
11 December 2016	Sunday	Bhiwani
18 December 2016	Sunday	Surat
25 December 2016	Sunday	Sujanpur
03 January 2017	Tuesday	Dahod (Gujarat)
04 January 2017	Wednesday	Kushalgarh (Raj.)
05 January 2017	Thursday	Anjana (Raj.)
06 January 2017	Friday	Kupda (Raj.)
07 January 2017	Saturday	Bolasa (M.P.)
08 January 2017	Sunday	Jhabua (M.P.)
15 January 2017	Sunday	Indore
22 January 2017	Sunday	Mumbai
29 January 2017	Sunday	Pilibanga
5 February 2017	Sunday	Hansi
12 February 2017	Sunday	Bhopal
19 February 2017	Sunday	Bilaspur
24 February 2017	Friday	Kohlapur, Nepal Ganj

Naam Deeksha in Delhi, Shree Ram Sharnam (October 2016 to March 2017)

30 October 2016	Sunday 11 AM
25 December 2016	Sunday 11 AM
22 January 2017	Sunday 11 AM
26 February 2017	Sunday 11 AM
26 March 2017	Sunday 11 AM

Purnima (October 2016 to March 2017)

16 October 2016	Sunday
14 November 2016	Monday
13 December 2016	Tuesday
12 January 2017	Thursday
10 February 2017	Friday
12 March 2017	Sunday

QUIZ ON RAMAYAN JI

Choose the correct answers of the following questions:

Q1. Who advised Kaikeyi to ask Dashrath to make Bharat the king of Ayodhya?
A. Devi B. Taraka C. Manthra D. Parvati

Q2. By whose parents was Dashrath cursed?
A. Ekalavya B. Karna C. Shravana D. Abhimanyu

Q3. What did Bharat take from Lord Rama after he met him in the forest and returned to Ayodhya?
A. Weapons B. Paduka/slippers C. Keys D. Money

Q4. What is the name of the lady whom Lord Rama released from a curse (she had become a rock after she was cursed by her husband sage Gautama)?
A. Mandodari B. Sumitra C. Ahalya D. Sita

Q5. To which two brothers did Shurpanakha go to complain, after Laxmana cut off her nose and ears?
A. Luv & Kush B. Krishna & Balarama C. Duryodhana & Dushyasana D. Khara & Dooshana

Q6. Who was the great sage in the forest of central India whom Lord Ram met? (Hint : This sage was responsible for stopping the growth of the Vindhya mountains)
A. Agasthya B. Vashishta C. Vishwamitra D. Suteekshan

Q7. What is the name of Jatayu's brother who gave information about Ravana's whereabouts to the army of Vanaras when they went in search of Goddess Sita ?
A. Jambavanta B. Angada C. Sampati D. Mareecha

Q8. What is the name of the brother of Ravana who left him to join Lord Rama after Ravana refused to listen to his advice to return Goddess Sita to Lord Rama's custody?
A. Kumbhakarna B. Dushana C. Vibhishana D. Jarasandha

Q9. What is the name of the saintly lady who had been waiting for Lord Rama for years in the forest and when Lord Rama met her, she offered him fruits which He ate?
A. Shabri B. Gandhari C. Manthara D. Taraka

Q10. What is the name of the vanara king who had been banished from his kingdom by his brother Baali and who became a close friend of Lord Rama?
A. Angada B. Sugreeva C. Kuber D. Jambvanta

Answers: 1. C, 2. C, 3. B, 4. C, 5. D, 6. A, 7. C, 8. C, 9. A, 10. B

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी के मुखारविन्द से

'जो परमेश्वर के हवाले अपने आपको कर देता है, परमेश्वर उसका सब कुछ करने वाले होते हैं, सब कुछ करते हैं।'

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, ए–27, नारायणा औद्योगिक ऐरिया, फेज़ 2, नई दिल्ली 110028 से मुद्रित, संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, A-27, Naraina Industrial Area, Phase 2, New Delhi 110028. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. "Applied for".